Nutritional value of Pepsi Cola and Campa Cola

2309. SHRI K. R. MALKANI: Will the Minister of FOOD PROCESSING INDUSTRIES be pleased to state:

(a) what is the confirmed, nutritional value of Pepsi Cola and Coca Cola, and

(b) if it is near zero whether Govern ment would consider requiring these companies to print this fact on their bottles?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF FOOD PROCESSING INDUSTRIES (SHRI TARUN GOGOI): (a) Pepsi and Coca Cola are Sweetened Aerated Waters which contain minerals, sugar etc.

(b) As per Fruit Products Order, nutritional value is not required to bet printed on the labels of such bottles.

Rotting of fruits and vegetables in the country

2310. SHRI PRAMOD MAHAJAN: Will the Minister of FOOD PROCESSING INDUSTRIES be pleased to state:

(a) whether it is a fact that there has been an annual loss of about 4000 crores due to rotting of fruits and vegetables in the country;

(b) if so, what are the details in this regard-

(c) what has been the production of fruits and vegetables during each of the last three years;

(d) what is the quantity and value of fruits and vegetables which was declared rotten during the period mentioned above, and what were the reasons therefor; and

(e) what steps Government have so far taken to step up the research and development efforts to preserve the produce?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF FOOD PROCESSING INDUSTRIES (SHRI TARUN GOGOI): (a) and (b) Although no survey has been conducted, according to a report of Dr. M.S. Swaminathan on "Perishable Agricultural Commodities (1981)", post-harvest deterioration/loss of certain fruits & vegetables was upto 25 to 40 per cent.

(c) and (d) The production of fruits and vegetables during the yards 1989-90,1990-91, 1991-92 had been 69.24 million tonnes, 82.38 million tonnes, 89.07 million tonnes respectively.

(e) No specific survey has been conducted to assess the exact wastage during these years. To reduce post-harvest losses, emphasis is being given or extending post-harvest technology, handling facilities.

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के विकास हेतु धनराशि का आबंटन

2311. श्री मूलचन्द मीणा : क्या खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान देश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का विकास करने हेतु आबंटित की गयी धनराशि का क्षेत्रवार ब्यौरा क्या है ; और

(ख) वर्ष 1992-93 और 1993-94 के दौरान इस प्रयोजनार्थ आबंटित की गई धनराशि का क्षेत्र-वार ब्यौरा क्या है ?

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री तरुण गोगोई) : (क) और (ख) योजना आयोग ने 8वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की योजना स्कीमों को लागू करने के लिए 146 करोड़ रु० के परिव्यय की मंजूरी दी है। 1992-93 और 1993-94 के लिए क्रमश: 40 और 47 करोड़ का परिव्यय मंजूर किया गया था । धनराशि का आबंटन राज्यवार, अथवा क्षेत्रवार नहीं किया जाता क्योंकि योजनाओं को परियोजनावार लागू किया जा रहा है । बहरहाल, 1992-93 और 1993-94 के लिए क्षेत्रवार आबंटन विवरण में दिया गया है ।

विवरण

8वीं योजना दौरान लागू की जा रही योजना स्कीमों के संबंध में क्षेत्रवार आवंटन का ब्यौरा

(करोड़ रु० में)

क्षेत्र का नाम	1992–93	1993–94
अनाज प्रसंस्करण	3.65	3.40
फल तथा सब्जी प्रसंस्करण	8.25	11.00
तथा पाल्ट्री प्रसंस्करण	5.70	8.00
मात्स्यिकी	18.50	19.00
उपभोक्ता उद्योग	1.80	4.00
सचिवालय आर्थिक सेवा	2.10	1.60
कुल : . . .	40.00	47.00

देश में फलों और सब्जियों की ऊंची कीमतें

2312. **श्री राम जेठमलानी :**
डा० जितेन्द्र कुमार जैन :

क्या **खाद्य प्रसंस्करण उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि "पेरिशेबल एग्रीकल्चरल कॉमोडिटीज" की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में फलों और सब्जियों की कुल पैदावार का 40 से 25 प्रतिशत भाग उपयोग हुए बिना ही नष्ट हो रहा है ;

(ख) यदि नहीं, तो क्या यह सच नहीं है कि देश में फलों और सब्जियों के उत्पादकों के मूल्य और उपभोक्ताओं से लिए जाने वाले मूल्य के बीच कई सौ प्रतिशत का अन्तर है;

(ग) यदि नहीं, तो सरकार की इस संबंध में क्या प्रतिक्रिया है;

(घ) क्या यह सच नहीं है कि फलों और सब्जियों के भारी मात्रा में नष्ट हो जाने का एकमात्र घटक ही देश में इनके उपभोक्ता मूल्य के उत्पादक मूल्य से काफी अधिक होने के लिए जिम्मेदार है और यह कि इन ऊंचे मूल्यों के कारण अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इन कृषि उत्पादों की मांग गिर जाती है;